भारतीय भाषाओं में रामकथा

असमिया भाषा

भाग—1

सम्पादक
डॉ. अनुशब्द

भारतीय भाषाओं में रामकथा

(असमिया भाषा)

भाग—1

प्रधान सम्पादक

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

पूर्व प्रोफ़ेसर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक

डॉ. अनुशब्द

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

सह-सम्पादक

डॉ. चारु गोयल

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग
श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

संरक्षक

श्री जितेन्द्र कुमार *आई.ए.एस.*
प्रमुख सचिव, संस्कृति एवं अध्यक्ष, अयोध्या शोध संस्थान

श्री शिशिर *पी.सी.एस.*
निदेशक, संस्कृति एवं उपाध्यक्ष, अयोध्या शोध संस्थान

परिकल्पना

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह

निदेशक, अयोध्या शोध संस्थान : तुलसी स्मारक भवन
अयोध्या, फ़ैज़ाबाद (उ.प्र.)

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन

4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002

फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710

शाखाएँ

अशोक राजपथ, पटना 800 004, बिहार

कॉफ़ी हाउस कैम्पस, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद 211 001, उत्तर प्रदेश

महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा 442 001, महाराष्ट्र

सुल्तानिया रोड, मोतिया पार्क, भोपाल 462 001, मध्य प्रदेश

www.vaniprakashan.com
marketing@vaniprakashan.in
sales@vaniprakashan.in

In Association with

ESTD.-1986

Ayodhya Shodh Sansthan

presents

BHARTIYA BHASHAON MEIN RAMKATHA : ASAMIYA BHASHA-1

Chief Editor Dr. Yogendra Pratap Singh
Editor Dr. Anushabda
Co-Editor Dr. Charu Goel
Visualisation Dr. Yogendra Pratap Singh

ISBN : 978-93-89915-82-2

Religion/Culture

© अयोध्या शोध संस्थान

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : ₹ 495

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

सिटी प्रेस, दिल्ली-110 095 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

अनुक्रम

असम में राम — 11
—प्रो. गजेन्द्र कुमार पाठक

असमिया 'बियानाम' में राम-प्रसंग : एक अध्ययन — 14
—डॉ. रीतामणि वैश्य

माजुली की मुखौटा कला में राम — 25
—डॉ. राजकुमारी दास

डॉ. इन्दिरा गोस्वामी और उनका रामायणी साहित्य : एक तुलनात्मक अध्ययन — 33
—करबी देवी

विष्णुदास एवं माधव कन्दलि के 'कथा' और 'सप्तकाण्ड' का तुलनात्मक अध्ययन — 44
—जोनटि दुवरा

खामति जनजाति के रामायण 'लिक-चाउ-लामाङ' में राम — 51
—डॉ. मालविका शर्मा

असमिया लोकगीतों में रामकथा — 58
—डॉ. मंजूमोनी सैकिया/डॉ. दीपा डेका

माधव कन्दलि कृत रामकथा में मौलिकता का प्रश्न — 65
—डॉ. परिस्मिता बरदलै

असमिया रामकथा की परम्परा — 73
—डॉ. अनुशब्द

अंकिया नाट और रामलीला : एक तुलनात्मक अध्ययन — 79
—कुल प्रसाद उपाध्याय/डॉ. जोनाली

शंकरदेव के राम का स्वरूप — 90
—डॉ. प्रीति वैश्य

पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न राज्यों के जीवन, साहित्य एवं कला में 'राम' — 97
—डॉ. नूरजहान रहमतुल्लाह

महाकवि शंकरदेव के राम — 105
—मणि कुमार

असमिया लोकगीतों में रामकथा 109
–उन्मेषा कोंवर

माजुली की मुखौटा कला में राम 118
–शेवाली कलिता तालुकदार सुधा कुमारी

असमिया लोकगीतों में रामकथा 122
–सिकदर आनवारुल इसलाम अब्दुल मतिन

पूर्वोत्तर भारत के लोक साहित्य में राम 129
–युगल चन्द्र नाथ कुशल महन्त

श्रीमन्त शंकरदेव की रचनाओं में राम 136
–पुरबी कलिता

वाल्मीकि रामायण और असमिया रामायण में राम : एक तुलनात्मक अध्ययन 141
–चन्दन हजारिका

चाय जनगोष्ठी के लोकगीतों में राम 149
–प्रियंका दास

पूर्वोत्तर भारत की जनजातीय भाषाओं में राम 155
–आलिया जेस्मिना नयानिका दत्ता चौधुरी

असम की कार्बी जनजाति की रामायण 'छाबिन आलुन' में राम 163
–अनामिका बरो

माधव कन्दलि कृत रामायण में राम 173
–अनन्या दास डिम्पी कलिता

असमिया मौखिक साहित्य में रामकथा 177
–अपराजिता डेका

रचनाकारों के पते ***190***

असमिया रामकथा की परम्परा

(माधव कन्दलि, शंकरदेव और माधवदेव के रामायणी साहित्य के सन्दर्भ में)

डॉ. अनुशब्द

"भक्ति आन्दोलन एक विराट जनान्दोलन है। एक व्यापक जनतान्त्रिक आन्दोलन है। एक अखिल भारतीय आन्दोलन है।"...आदि-आदि। जब ऐसी स्थापनाओं पर ग़ौर करता हूँ तो मन में बरबस यह सवाल उठता है कि इस भक्ति आन्दोलन का स्वरूप कितना और कैसे अखिल एवं विराट है कि उसमें कुछ क्षेत्र विशेष के कवियों एवं उनके काव्यों को ही स्थान दिया जाता है। क्या सामन्तवाद के प्रति विरोध एवं मानवतावाद की स्थापना का स्वर केवल कुछ क्षेत्र विशेष के कवियों एवं उनके काव्यों में ही था। यह विचारणीय प्रश्न है। आख़िर भक्ति आन्दोलन का फ्रेम इतना छोटा कैसे हो सकता है? अखिल और विराट होने का अर्थ मैं तो यही समझता हूँ कि जिसमें कश्मीर से कन्याकुमारी तक तथा द्वारका से दीमापुर तक सब शामिल हों। लेकिन विडम्बना यह है कि जब कभी हम भक्ति आन्दोलन के अखिल भारतीय स्वरूप पर बात करते हैं तो हमारी चर्चा के केन्द्र में बंगाल के चैतन्य महाप्रभु, महाराष्ट्र के नामदेव, ज्ञानेश्वर, एकनाथ, तुकाराम, राजस्थान की मीरा, उत्तर प्रदेश के कबीर, सूर, जायसी, तुलसी, गुजरात के दादू दयाल, पंजाब के गुरुनानक, दक्षिण के आलवार, नयनारों, बसवन्ना, अक्क महादेवी आदि प्रमुख रूप से होते हैं। उनके साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक अवदानों पर खुलकर चर्चा होती है लेकिन पूर्वोत्तर भारत के रचनाकारों एवं उनके रचनात्मक अवदानों पर उतना फोकस नहीं किया जाता। इस उपेक्षा की वजह क्या है? इस पर विचार करने की ज़रूरत है। प्रो. गोपेश्वर सिंह ने इसका कारण भक्तिकाव्य की आलोचना और आलोचकों का 'काशी सेंट्रिक' होना बताया है।

ध्यातव्य है कि समूचे मध्यकालीन भारतीय समाज की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियाँ कमोबेश एक जैसी ही थीं और उनसे जनता तथा समाज के लिए चिन्तित और समर्पित रचनाकारों-समाजसुधारकों की मनःस्थिति भी लगभग एक जैसी ही थी। फिर चाहे वह पूर्वोत्तर भारत हो, उत्तर, दक्षिण या पश्चिम भारत हो। बावजूद इसके हम देखते हैं कि कबीर, सूर, जायसी, तुलसी आदि के अवदानों को तो प्रमुखता से रेखांकित किया जाता है लेकिन पूर्वोत्तर भारत के माधव कन्दलि, माधवदेव, शंकरदेव, अनन्त कन्दलि, दुर्गावर कायस्थ, रघुनाथ महन्त सरीखे शीर्षस्थ रचनाकारों पर, उनके विचारों पर; जिनका पूर्वोत्तर भारत के साहित्य, समाज, कला तथा संस्कृति के निर्माण एवं विकास में गहरा हस्तक्षेप रहा है, लगभग नहीं के बराबर या नाममात्र की चर्चा होती है। हाल के कुछ वर्षों में महापुरुष श्रीमन्त शंकरदेव का नाम तो पॉलिटिकल स्टंट के तौर पर ही सही लेकिन लिया जाने लगा है। और, धीरे-धीरे दिल्ली आदि क्षेत्रों के आम लोग भी श्रीमन्त शंकरदेव के